रूहों का शिकंजा

Vijay Kadam

RAJ COMICS राज कॉमिक्स BY MANOJ GUPTA

संस्थापक श्रद्धांजलि वर्ष 2021

दिन की रोशनी में हम जिन चीजों पर हंसते हैं, रात के सन्नाटे में वही चीजें हमारे होशो-हवास गुम कर देती हैं। ऐसे ही कुछ दृश्य जब रात के सन्नाटे में नजर आते हैं, तो फर्क करना मुश्किल हो जाता है कि हम *सपने* में जाग रहे हैं, या जागते हुए सपना देख रहे हैं।

रूहों का शिकंजा

कथा एवं चित्र - अनुपम सिन्हा

संपादक - मनीष चंद्र गुप्त

यह कहना मुश्किल है कि भूत-प्रेत वास्तव में होते हैं, या नहीं। कई लोग तो बिना कभी देखे ही भूतों पर यकीन कर लेते हैं।
AIRPORT

लेकिन कुछ लोगों को अपनी आंखों से भूत-प्रेत देखने के बावजूद भी उनपर यकीन नहीं आता।
तैयारी में कोई कमी तो नहीं है न, पवन? मानवेन्द्र जी हमारे पड़ोसी देश मापाल के राष्ट्रपति होने के साथ ही हमारे गहरे मित्र भी हैं।
आप निश्चिंत रहिए, प्रधान-मंत्री जी। मैंने कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी है!

विशाल जंबो जेट बड़ी सुगमता से हवाई-पट्टी पर उतर आया। विमान का दरवाजा खुला और मापाल के राष्ट्रपति मानवेन्द्र मुस्कराते हुए बाहर निकले।
भारत में आपका स्वागत है, माननीय राष्ट्रपति जी!

धन्यवाद, प्रधान मंत्री जी! मुझे भी भारत आकर...
अचानक तभी – राष्ट्रपति मानवेन्द्र जी के नीचे उतरते पैर बुरी तरह से लड़खड़ाए।...

...और वे सीढ़ियों पर लुढ़कते चले गए।

राष्ट्रपति मानवेन्द्र के साथ आए मापाली सेना के जनरल बिलाल और राष्ट्रपति के पर्सनल डॉक्टर थापा तेजी से उनकी तरफ लपके।
AIR
श्रीमान!
मैं देखता हूं!

तुरंत ही - एयरपोर्ट की एंबुलेंस घटनास्थल पर आ लगी।
चिंता की बात नहीं है। दिल की धड़कन एकदम सामान्य है!
इनको तुरंत अस्पताल पहुंचाना होगा! एक-एक क्षण कीमती है!
आप एंबुलेंस में इनके साथ ही जाइए, डॉ॰ थापा!

अस्पताल-कर्मियों ने एक पल भी नष्ट नहीं किया।
चिंता की कोई बात नहीं है, सर! डॉ॰ थापा बहुत काबिल डॉक्टर हैं!
वे राष्ट्रपति जी को कुछ भी नहीं होने देंगे!
लेकिन एकदम से राष्ट्रपति जी को ऐसा क्या हो गया?

सवाल सुनते ही जनरल बिलाल का चेहरा गंभीर हो गया।
राष्ट्रपति जी की यह हालत उसी समस्या के कारण है जिसको सुलझाने के लिए वे मदद मांगने आप के पास आए हैं!
हम जो भी कर सकते हैं, जरूर करेंगे! परंतु समस्या क्या है?

आत्माएं! राष्ट्रपति जी के अनुसार उनको उनके मृत संबंधियों की आत्माएं तंग करती हैं! वे कई हफ्तों से ठीक तरह से नहीं सो सके हैं!
नींद के इंजेक्शन भी अब उनपर ज्यादा असर नहीं करते!
आज भी शायद वे नींद की कमी से ही बेहोश हो गए थे!

उनकी इस हालत के कारण ही मैं खुद उनका अंगरक्षक बनकर साथ आया हूं!
हूं! आइए! हम भी अस्पताल चलते हैं!

और फिर-अस्पताल के एकांत में -
...तो जनरल बिलाल ने तुमको मेरी समस्या के बारे में पहले ही बता दिया है!
मैं यहां पर राष्ट्रपति नहीं-बल्कि एक दोस्त की हैसियत से आया हूं!
मैं अपनी शक्ति भर तुम्हारी हर मदद करूंगा!
तुम मुझे पूरी बात विस्तार से बताओ, मानवेन्द्र!
तो सुनो!

लगभग दो महीने पहले की बात है। एक रात, जब मैं देर तक कुछ अर्जेन्ट काम निपटा रहा था, तभी मेरे पीछे से एक आवाज आई।
मानू, सुनो!
मुझे मेरी पत्नी रत्ना के अलावा और कोई इस नाम से नहीं बुलाता।

मैं चौंक कर घूमा। मेरे सामने वास्तव में मेरी पत्नी खड़ी थी।
?
और तुम जानते ही हो कि मेरी पत्नी को मरे हुए साल भर हो चुका है।

मेरी जुबान जैसे लकड़ी की हो गई थी।
रत्ना! तुम... तुम...!
वह सिर्फ मुस्कराई। और मुझे अपने पास आने का इशारा करती हुई वह बालकनी की तरफ बढ़ी।

वह बिल्कुल असली लग रही थी। मैं पागलों की तरह उसके पीछे लपका। वह तबतक दरवाजे से बाहर निकल चुकी थी।

मैं बालकनी पर जब पहुंचा, तो जो कुछ मैंने देखा, वह मुझे पागल बना देने के लिए काफी था। रत्ना धीरे-धीरे हवा पर चलती हुई मुझसे दूर जा रही थी।
उसकी आकृति भी, न जाने क्यों, धुंधली पड़ती जा रही थी।

मेरा सिर चकराने लगा। लड़खड़ाते कदमों से मैं कमरे में आने के लिए वापस मुड़ा...
...और डर के मारे मेरे पैर जड़ हो गए।

कमरे में, मेरी कुर्सी पर बैठे हुए, बरसों पहले मर चुके मेरे पिता, मुझे अपने पास आने का इशारा कर रहे थे।

मेरा पहले से चकराता सिर और ज्यादा चकराने लगा। उसके बाद क्या हुआ, मुझे याद नहीं!

जब मुझे होश आया तो मेरा बदन बुखार से तप रहा था। मेरे पर्सनल डॉक्टर, डॉ० थापा की काबिल देखरेख में मैं जल्दी ही ठीक हो गया।

लेकिन उसके बाद से यह लगभग रोज का वाकया हो गया। मेरे अंगरक्षक मेरे कक्ष में ही सोने लगे।
लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि वे आकृतियां उनको नहीं दिखाई पड़ती थीं।
पूरी नींद न मिल पाने के कारण मेरी दिमागी हालत भी डांवाडोल होने लगी। मैं चिड़चिड़ा हो गया।
पूरे देश में तो यह अफवाह फैली है, कि मैं पागल हो गया हूं!

मापाल में स्थिति विस्फोटक है। किसी भी वक्त देश में संवैधानिक संकट उत्पन्न हो सकता है। अब तक तो जनरल बिलाल ने सेना की मदद से स्थिति संभाली हुई है! लेकिन क्रांति का बिगुल कभी भी बज सकता है!
समझा! अब तुम यह बताओ कि मैं इसमें तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं?

और ध्रुव ने अपने प्रधानमंत्री का कहना नहीं टाला। भारत की यात्रा के बाद जब राष्ट्रपति मानवेन्द्र मापाल पहुंचे तो ध्रुव उनके साथ था।

रात को – डिनर के बाद, जब ध्रुव और राष्ट्रपति अकेले रह गए, तब –

श्रीमान! आपने इस काम के लिए भारत से सहायता क्यों मांगी? यह काम तो आपकी खुफिया एजेंसी भी कर सकती थी।

हां! लेकिन षडयंत्रकारियों की खुफिया एजेंसी में कितनी गहरी घुसपैठ है, यह हमको नहीं पता। इसीलिए हम उनपर भरोसा नहीं कर सकते!

यह तो स्पष्ट है, कि अगर यह षडयंत्र है, तो यह आपको राष्ट्रपति पद से हटाने के लिए है। आपके हट जाने से सबसे ज्यादा फायदा किसको होगा?

मेरे ख्याल से सबसे ज्यादा फायदा हमारी विरोधी पार्टी के नेता नागफन भंडारी को होगा!

कैसे?

देखो, अगले चुनाव कुछ ही महीनों में होने वाले हैं। अगर जनता को शक हो गया कि मेरा दिमाग खराब हो गया है तो मेरी पार्टी चुनाव हार जाएगी!...

...और हमारी प्रमुख विरोधी पार्टी चुनाव आसानी से जीत जाएगी!

और नागफन भंडारी उस पार्टी का अध्यक्ष होने के कारण *राष्ट्रपति* बन जाएगा।

तो अब हमारा पहला काम...

मानू!

एक सर्द आवाज पीछे से उभरी।

तभी- गोल टेबल एक झटके से गिर गई।
यह क्या? टेबल कैसे गिर गई?
वही थी। वही थी!! वही थी!

आह! मुझे ...मुझे बचा लो! बचा लो! वह मुझे अपने साथ..ऽऽ!
श्रीमान!
लेकिन राष्ट्रपति मानवेन्द्र बेहोश हो चुके थे।

राष्ट्रपति जी तो बेहोश हो गए! मुझे तुरंत कॉल बैल बजाकर मदद...
अरे!
दरवाजे के बाहर कोई खड़ा हुआ है! यानि कोई हमारी ...

..जासूसी कर रहा है!
ध्रुव ने एक झटके से दरवाजा खोला।

वह भाग रहा है! लगता है उसने मेरे आने की आहट सुन ली है!
रूक जाओ! वरना...

उस व्यक्ति ने पलभर के लिए पीछे मुड़कर देखा
और उसके हाथ की ट्रे से दूध से भरे दो गिलास नीचे आ गिरे।

उसका अगला कदम जमीन पर गिरे चिकने दूध पर पड़ा और-
आ ाा ाा
..उसका पैर फिसला।

और उसका शरीर मुंडेर पार करता हुआ पथरीले फर्श पर आ गिरा।
TTSSSSS

तभी पूरा कॉरीडोर भागते कदमों की आहट से भर गया।
क्या हुआ, ध्रुव ?
जनरल बिलाल !

आप तुरंत डॉ० थापा को बुलवाइए! राष्ट्रपति जी अपने कक्ष में बेहोश पड़े हुए हैं! उनको फिर से आत्माएं दिखाई पड़ी थीं!
सिपाही, डॉ० थापा को नीचे से तुरंत बुलाकर लाओ!
जो आज्ञा, सर!

नीचे से? क्या डॉ० थापा, यहीं, राजभवन में ही रहते हैं?
हां। जबसे राष्ट्रपति जी की तबियत खराब हुई है, तब से उन्होंने राष्ट्रपति जी के नजदीक रहना ही तय किया है! पर अभी चीखा कौन था?

वह!
माई गॉड! यह तो मानसुन है! राष्ट्रपति जी का निजी सचिव। लेकिन यह गिरा कैसे?
यह शायद हमपर जासूसी कर रहा था! जब मैं बाहर आया तो यह मुझे देखकर भागा!

इसके हाथ में दूध के दो गिलास थे। वे इसके हाथ से छूट गए और यह उसी दूध पर फिसलकर नीचे आ गिरा!
ओह! लेकिन यह तो इसका रोज का नियम था!
राष्ट्रपति जी को यह रोज रात दूध देने जाता था और फिर उनकी इजाजत लेकर अपने घर जाता था!

यह डरकर भागा तो जरूर होगा! लेकिन तुमको देखकर नहीं! बल्कि कुछ और देखकर!
आपका मतलब है कि... आत्माएं देखकर!!
ओ! आइए, राष्ट्रपति को देखने चलें!

राष्ट्रपति जी अब कैसे हैं, डॉ॰ थापा ?
ठीक हैं! मैंने उनको नींद का इंजेक्शन दे दिया है! अब मेरे ख्याल से आप लोगों को उन्हें आराम करने देना चाहिए!

तभी ध्रुव की नजरें कमरे में गिरी गोल टेबल पर पड़ीं और वह चौंक उठा।
यह क्या है, जनरल ?

यह तो ... ओह! यह एक विशेष प्रकार का धागा है! इसे जादू-टोनों में इस्तेमाल किया जाता है!
कहते हैं कि यह आत्माओं को भी बांध सकता है!

आई सी! आइए, जनरल! हमें अब राष्ट्रपति जी को आराम करने देना चाहिए! ठीक है न, डॉ॰ थापा ?
बिल्कुल ठीक! मैं यहीं ठहरता हूं!

ध्रुव, जनरल बिलाल के साथ बाहर निकल आया।
यह विरोधी पार्टी का अध्यक्ष नागफन भंडारी कैसा आदमी है, जनरल ?
वैसे तो ठीक ही है! लेकिन अपना मतलब साधने के लिए वह किसी भी हद तक गिर सकता है!

उसके बारे में मैं ज्यादा नहीं जानता हूं! जो कुछ थोड़ा-बहुत डॉ॰ थापा मुझे बताते रहते हैं, बस उतना ही पता है!
डॉ॰ थापा उसके बारे में कैसे जानते हैं ?

क्योंकि डॉ० थापा, नागफन भंडारी के भी पर्सनल डाक्टर रह चुके हैं!
ओह! अब धागों के छोर आपस में मिल रहे हैं!
यह तुम्हारा बेडरूम है, ध्रुव!
अब तुम भी थोड़ा सा आराम कर लो!

मैं तो आजकल, रातभर, राजभवन पर खुद ही ड्यूटी दे रहा हूं!
यह तुमने किसकी फोटो लगा रखी है, ध्रुव?
मेरे माता-पिता, राधा और श्याम की!
अब ये इस दुनिया में नहीं हैं!

ओह! आई एम सॉरी! लेकिन तुम तो आई० जी० राजन के बेटे हो न? फिर ये तुम्हारे माता-पिता कैसे हुए?
आई० जी० राजन ने मुझे गोद लिया है! लेकिन वे किसी भी हालत में मेरे असली पिता से कम नहीं हैं!
ओ! यह मुझे पता नहीं था!
अच्छा, गुड नाइट, ध्रुव!
गुड नाइट, जनरल!

जनरल बिलाल तो चले गए। लेकिन नींद ध्रुव की आंखों से कोसों दूर थी।
राष्ट्रपति जी को अगर अपनी पत्नी की आत्मा दिखाई पड़ी, तो मुझे क्यों नहीं दिखी?
उनको कुछ दिखा तो जरूर था!...
क्योंकि आवाज मैंने भी सुनी थी!

और वह गोल टेबल कैसे गिर गई?
राष्ट्रपति जी का सचिव मानसुन अगर जिंदा रहता तो शायद काफी कुछ पता चल सकता था!
लेकिन कम से कम एक बात तो पता चली!
कि डॉ० थापा, राष्ट्रपति जी के दुश्मन नागफन भंडारी के पुराने दोस्त हैं!

यह भी हो सकता है कि डॉ० थापा, नागफन भंडारी के इशारे पर, राष्ट्रपति जी को कुछ ऐसी नशीली दवाएं दे रहा हो, जिससे उनकी दिमागी हालत क्रमशः बिगड़ती जा रही हो!
कल इस नागफन भंडारी से मिलना ही पड़ेगा!

यह लड़का खतरनाक है, दादा! यह जो कह रहा है वह कर भी सकता है!
और मैं यह बिल्कुल भी नहीं चाहता हूं कि...
..मानवेन्द्र को पागल बनाने की प्रक्रिया में कोई विघ्न पड़े!
इसीलिए मैंने इस लड़के का इन्तजाम पहले से ही कर दिया है!

तो मैं भी तैयार हूं!
हल्का सा एक धक्का लगा और एक चट्टान नीचे की ओर गिरने लगी।

ध्रुव ने गड़गड़ाहट सुन कर ऊपर देखा। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

एक विशाल चट्टान ठीक उसी की तरफ बढ़ रही थी। ध्रुव के पास, सिर्फ एक क्षण का समय था।

और ध्रुव ने वह कीमती क्षण नहीं गंवाया।
धड़ाक
आज तो इस उभरी चट्टान ने ही बचाया!

हा, हा! शाबास, नथवल! एक ही झटके में होकरे को भगवान के दर्शन करा दिए!

अपना वार कभी खाली नहीं जाता, लम्बू! आओ, भंडारी दादा को यह खबर दे आएं कि हम...

..नाकामयाब रहे!
तुम!!
तु... तुम बच कैसे गए?

मेरे बचने की दौड़ो!...
और अब अपने बचने का रास्ता सोचो!
तेरी मौत शायद इस चाकू पर लिखी थी!

मैं अभी चाकू से इसकी आंतें...आह!
चाकू से बच्चे नहीं खेला करते!..

...वरना हाथ कट जाता है! इस बेल्ट की तरह!
खच
म.. मेरी पैंट सरक जाएगी! और मैं नीचे कुछ नहीं पहने हुए हूं!

तो शरीफ आदमी की तरह पैंट पकड़े रहना।
ढिशं

आज सुबह जो कसरत नहीं कर पाया था, उसकी कमी पूरी हो गई!
ध्रुव के लिए किराए के दो गुंडे, भुनगों से ज्यादा कुछ नहीं थे।

लेकिन उसको गुंडों के तीसरे साथी के बारे में कुछ नहीं पता था।
धड़ाक
वह कुछ पलों के लिए होश खो बैठा।

और जब उसकी धुंधली आंखें देखने योग्य हुईं, तो तीनों गुंडे दूर जा चुके थे।

मोटर साइकल का तो चूरा बन गया! अब तो, बेटा ध्रुव, टैक्सी मिलने तक पैदल मार्च करना पड़ेगा!

और आधे घंटे बाद-
अरे, ध्रुव! यह क्या हालत बनाकर आ रहे हो? और तुम्हारी मोटर - साइकल कहां है?
शायद यहां के कबाड़ी बाजार में!

डॉ॰ थापा कहां हैं ?
अपने क्वार्टर में !
उनसे कुछ दवाई ले लूं, तो तबियत ठीक हो जाए!

डॉ॰ थापा अपने कमरे में किसी गहरी चिंता में डूबे थे।
क्या मैं अंदर आ सकता हूं, डॉ॰ थापा?
आओ, ध्रुव, आओ! इधर कैसे चले आए?

मैं राष्ट्रपति जी की तबियत के बारे में पूछने आया था। कैसे हैं वे अब?
पहले से बेहतर हैं! लेकिन अगर उनको फिर कोई आत्मा दिखाई पड़ी, तो वे फिर वापस इसी हालत में पहुंच जाएंगे।

एक बात बताइए, डॉ॰ थापा! इन आत्माओं को राष्ट्रपति जी के अलावा क्या और किसी ने कभी देखा है?
नहीं!
यानि ये आत्माएं उनके अपने दिमाग की उपज भी हो सकती हैं!
ऐसा किसी दवाई से संभव है क्या?

क्यों नहीं? ऐसे 'नर्वस टॉनिक' आते हैं जिनको ज्यादा मात्रा में लेने से दिमाग पर बुरा असर पड़ता है, और आदमी को तरह-तरह की अजीब चीजें दिखाई पड़ने लगती हैं!
हूम! तो अब एक आखिरी प्रश्न का उत्तर दीजिए, डॉ॰ थापा!...

...कि आप ये टॉनिक राष्ट्रपति जी को कब से दे रहे हैं?
क्या बकवास कर रहे हो तुम?

अच्छा, फिर यह बता दीजिए कि नागफन भंडारी इस काम के लिए आपको कितने पैसे दे रहा है?
मैं तुम्हारी बदतमीजी का जवाब अभी भी दे सकता हूं! लेकिन इस वक्त तुम हमारे मेहमान हो!

नाऊ गेट आउट!
ठीक है, डॉ॰ थापा! लेकिन सच सामने आ कर ही रहता है!
आगे से यह हमेशा याद रखना...
...कि मैं तुमपर नजर रखे हुए हूं!

राष्ट्रपति जी को डॉ॰ थापा के बारे में बताने से पहले मुझे कुछ और सबूत इकट्ठे करने होंगे, क्योंकि उनको डॉ॰ थापा पर बहुत भरोसा है!
वह दिन बिना किसी अन्य घटना के बीत गया।

और रात की काली चादर पूरे मापाल पर फैल गई –
राष्ट्रपति जी अभी भी सो रहे हैं, ध्रुव! तुम भी थोड़ा आराम कर लो तो ठीक रहेगा!
बाद में अगर चाहो तो हम तुम आज रात साथ ही ड्यूटी देंगे!
ओ॰ के॰ सर!

चलो! आराम के बहाने एकांत तो मिला! मुझे इसी वक्त का इंतजार था! डॉ॰ थापा इस समय राष्ट्रपति जी के साथ ही हैं! मुझे पूरा यकीन है...
...कि डॉ॰ थापा अब अपना काम जल्द से जल्द निपटाना चाहेगा! मैं आज रात खिड़की के बाहर से उसपर नजर रखूंगा!

ताकि मैं उसको रंगे हाथों...
ध्रुव!
तभी एक सर्द आवाज कमरे में तैर गई।

ध्रुव पलटा, और उसके दिल की धड़कन पलभर के लिए रुक गई। क्योंकि यह दृश्य आज वह वर्षों बाद देख रहा था।

मां! पिताजी!!
म..मगर आप दोनों तो जुपिटर सर्कस की आग में जल गए थे!!

हमारे शरीर जल गए थे, बेटे! लेकिन आत्माएं कभी नहीं जलतीं। हम आज भी जिंदा हैं! लेकिन एक दूसरे रूप में!
हम हमेशा तुम्हारे साथ रहते हैं, बेटे! चाहे तुम हमें देख पाओ या न देख पाओ!

राधा और श्याम को अपने सामने देखकर ध्रुव अपने पर काबू न रख सका। वह उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ा।
हमें छूना मत! हमको छूना मना है!

लेकिन ध्रुव के कान कुछ नहीं सुन रहे थे।
यह तो बढ़ता ही आ रहा है!
आओ, राधा! नियमों को तोड़ना ठीक नहीं है!
यह क्या?
ये तो बंद दरवाजे के पार जा रहे हैं!!

ध्रुव ने लपककर दरवाजा खोला।
वे रहे!
मां! पिताजी!

अरे, ध्रुव! कहां भागते जा रहे हो?
वो देखो, जनरल, मेरे बिछुड़े मां और पिताजी!
कहां हैं तुम्हारे मां और पिताजी?
मुझे तो कुछ भी नहीं दिख रहा है!

दोनों आकृतियों को नजरों से दूर जाते देखकर ध्रुव धैर्य खो बैठा।
हटो रास्ते से, जनरल!...
..वरना वे गायब हो जाएंगे!

वे रहे! हां!
मां, रुक जाओ! रुक जाओ!
ध्रुव पागलों की तरह दौड़ रहा था। लेकिन फासला उतना का उतना ही था।
उसको यह भी होश नहीं था कि ये परछाइयां उसको किस तरफ ले जा रही हैं। उसको होश तब आया जब वे दोनों --
गायब हो गए! लेकिन कहां?

ध्रुव अभी यह सोच भी न पाया था कि आगे क्या करे, तभी अचानक उसके चारों तरफ कई आकृतियां खड़ी हो गईं।
?

आकृतियां - जो निश्चित ही इस दुनिया की नहीं थीं।
क..कौन हो तुम सब?
हम तुम्हारे दोस्त हैं, ध्रुव!
तुम्हारे असली मां-बाप चाहते हैं कि तुम हमारे साथ ही रहो।
इसीलिए हम तुमको साथ ले जाने आए हैं।
ही ही हो हो हो हा हा।
मुझे जाने दो! जाने दो!

बचकर निकलने के सभी रास्ते बंद हो चुके थे। चारों तरफ से आत्माएं ध्रुव की तरफ बढ़ रही थीं।

लेकिन वे ध्रुव तक पहुंचने से पहले ही गायब हो गईं।

कौन? आप कौन हैं?
पहले तू कापालिक को यह बता कि तू कौन है? और इन दुष्ट आत्माओं के चक्र में कैसे फंस गया?
आत्माएं इस तरह से नहीं दिखा करती हैं, बाबा!

ये आत्माएं नहीं थीं! यह तो नजरों का धोखा था! किसी नशीली दवाई का असर था!
हा हा हा हा!

बालक, मैं पिछले एक सौ पचास सालों से हिमालय पर कपाल-साधना कर रहा था! और इस साधना में तो मेरी आत्माओं से रोज ही मुलाकात होती थी!

आत्माएं तो मेरी दोस्त हैं! लेकिन बुरी आत्माओं का मैं जानी दुश्मन हूं! इसीलिए जब मुझको नीलजेबुब ने इस देश पर मंडरा रहे खतरे के बारे में बताया तो मैं पलभर भी नहीं रुका!
यह नीलजेबुब कौन है?

मेरा सबसे प्यारा प्रेत! अब आओ!
हमको इस देश को दुष्ट प्रेतात्माओं से मुक्ति दिलानी है!
चलिए, कापालिक बाबा!

राजभवन में भारी चहल-पहल थी।
ध्रुव! तुम भागते हुए कहां गए थे?
और जनरल बिलाल कहां हैं?

जनरल बिलाल!
वे तो मेरे साथ नहीं गए थे।
तुम्हारे साथ नहीं! लेकिन वे तुम्हारे पीछे ही गए थे। और अभी तक वापस नहीं लौटे।

अब वह शायद कभी वापस नहीं आएगा! दुष्ट आत्माएं किसी को नहीं छोड़तीं!
अगर मैं वक्त पर न पहुंच गया होता तो यह बालक भी वापस नहीं आ पाता!

तुम कौन हो, भई? और यहां कैसे घुस आए? यह राष्ट्रपति भवन है, कोई धर्मशाला नहीं!
इन को मैं लेकर आया हूं, डॉ॰ थापा!
अब शायद यह कापालिक बाबा ही हमारी आखिरी उम्मीद हैं!

मैंने खुद अपनी आंखों से आत्माओं को देखा है। अपने मृत माता-पिता की आत्माओं से बात की है!
अब तो न चाहते हुए भी मुझे भूत-प्रेत पर यकीन हो गया है!
और इन आत्माओं के सामने हमारा आधुनिक विज्ञान बेकार है!

समय नष्ट करना उचित नहीं है! मुझे शीघ्रता से राष्ट्रपति के पास ले चलो!
लेकिन वे अभी बीमार...
चुप रहो!

कापालिक का रौद्र रूप देखकर डॉ० थापा की हिम्मत जवाब दे गई।
आओ, बालक!
मुझे यहां पर दुष्ट आत्माओं का आभास हो रहा है!
वे इस तरफ हैं!

मेरा अस्थिदंड उनकी तरंगें ग्रहण कर रहा है!
आश्चर्य! यह तो अपने आप राष्ट्रपति जी के कक्ष की तरफ जा रहा है!

सहसा कापालिक रुक गया।
आत्माएं इस कक्ष में हैं!
आप तो चमत्कारी हैं, बाबा!
यही राष्ट्रपति जी का कमरा है!

सु..सुनो! अगर तुम्हारे अनुष्ठानों से राष्ट्रपति जी को जरा भी नुकसान पहुंचा तो..
इसको शांत कर, बालक!
वरना मैं इसको भस्म कर दूंगा!

शांत रहिए, डॉ० थापा!
कापालिक बाबा राष्ट्रपति की मदद करने आए हैं!...
... उनको नुकसान पहुंचाने का इनका कोई इरादा नहीं है!

राष्ट्रपति मानवेन्द्र भी यह दृश्य देखकर चौंक उठे -
यह क्या हो रहा है ? कौन हो तुम ?
इनको मैं लाया हूं, श्रीमान!

ये एक महान कापालिक हैं! ये उन सारी दुष्ट आत्माओं को कैद कर लेंगे, जो आप के संबंधियों का रूप धरकर आपको तंग करती हैं!
यह तुम बोल रहे हो, ध्रुव?
तुमको इन बातों पर कबसे यकीन हो गया? तुम...

तभी कापालिक ने चीखकर अपना अस्थिदंड उठाया।
वह है!
और सामने एक स्त्री प्रगट हो गई।

और वह है!
मेरी पत्नी, और मेरे पिता!?

तुम्हारा खेल खत्म हुआ, गंदी आत्माओ! अब तुम अपने भयंकर अंजाम के लिए तैयार हो जाओ!
कापालिक का हाथ हवा में उठा -

लेकिन वे दोनों रहस्यमय आकृतियां सिर्फ हंसीं।
...हा हा हा हा हा हा हा...
उनके जुड़े हुए हाथों से एक पीली किरण निकली।

और कापालिक चीख कर दूर जा गिरा—
आईईई

कापालिक क्रोध से पागल हो गया।
तुम्हारी ये हिम्मत! मैं अभी तुमको भस्म...
जुड़े हुए हाथों से रोशनी की एक और पीली किरण निकली।

आऊ!
इस बार का वार और ज्यादा ताकतवर था।

दोनों आकृतियां फिर से हंसीं, और गायब होने लगीं।
ये दोनों तो गायब हो रहे हैं।
ये आत्माएं बहुत शक्तिशाली हैं।
मैं इस तरह से इनको वश में नहीं कर सकता।

डॉ० थापा और राष्ट्रपति जी भी यह घटनाएं देखकर प्रभावित हो गए।
तो फिर ये कैसे वश में आएंगीं, महाराज?
इसके लिए मुझे इसी कक्ष में, राष्ट्रपति के साथ, एकांत में एक विशेष अनुष्ठान करना पड़ेगा।

उससे मुझको वह शक्ति प्राप्त होगी, जिससे ये आत्माएं मेरे वश में आ जाएंगी। कहिए, आप लोग राजी हैं?
हां, हां! मैं एकदम तैयार हूं।
जो कुछ चाहिए, बताओ! मैं सब लाकर दूंगा।

तुम्हारा क्या कहना है, बालक?
मुझे तो सिर्फ इतना ही कहना है कि...

अब तुम्हारा खेल खत्म हो गया, कापालिक!

कापालिक पल भर में सारी स्थिति समझ गया -
तो यह ले!
आह!

लेकिन ध्रुव अब इस नाटक को और आगे बढ़ने देने के मूड में नहीं था -

ये घूंसा है मेरे माता-पिता की असली आत्माओं से खिलवाड़ करने के लिए!

और ये है राष्ट्रपति जी को पागल घोषित करने की साजिश के लिए!

लेकिन ध्रुव यहीं पर गलती कर गया

उसने अपनी कमर की खाल से एक लंबा चाकू निकाला।

गुस्से में भरे डॉ॰ थापा आगे बढ़े।

अब माननीय राष्ट्रपति जी मुझको मेरे हेलीकॉप्टर तक आदर सहित पहुंचाएंगे! मैं अपनी स्कीम पर इस तरह से पानी नहीं फिरने दूंगा!
!
तभी न जाने कैसे, बगल की टेबल पर रखी एक भारी मूर्ति अचानक हिली-

और कई किलो का वजन कापालिक के हाथ पर आ गिरा-
चाकू उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरा।

ध्रुव ने यह सुनहरा मौका नहीं गंवाया -
हाय!

आप राष्ट्रपति जी के गले का घाव देखिए, डॉ॰ थापा!
धाड़
इस पाखंडी से मैं निपट लेता हूं!

बस करो! आई! बस! बस!! ... नहीं तो मैं मर जाऊंगा!
सब सच-सच बताएगा कि नहीं? बोल!
मैं सब बता दूंगा! सब बता दूंगा!
हाय मेरी नाक!

यह आखिर है कौन, ध्रुव?
श्रीमान, यह भेड़ की खाल में छिपा ...

...भेड़िया है!
जनरल बिलाल तुम!? तुम कापालिक हो?
जनरल बिलाल!

लेकिन फिर वे आत्माएं?
इसके बारे में यह नमकहराम खुद ही बताएगा!
बोलो!
व..वे आत्माएं नहीं थीं। वे 'थ्री-डायमेंशनल' आकृतियां थीं।
जो प्रोफेसर हान के बनाए स्पेशल प्रोजेक्टर से प्रक्षेपित की जाती हैं।

प्रोफेसर हान? वही जिनकी तीन महीने पहले हत्या हो गई थी?
हां, वही! यह सब उसी दिन से शुरू हुआ था, जिस दिन हान की हत्या हुई थी।

उस दिन हान ने मुझको अपना नया आविष्कार दिखाने के लिए डिनर पर आमंत्रित किया था।
यह थ्री डायमेंशनल प्रोजेक्टर तो सिर्फ कैलकुलेटर जितना बड़ा है!!

हा हा हा! लेकिन, जनरल, तुम इतने बड़े सिर्फ चार प्रोजेक्टरों की मदद से पूरी सेना से मोर्चा ले सकते हो!
वह कैसे?
देखो! मैं इसमें पहले से रिकॉर्ड की गई हुई एक कैसेट डालता हूं!

और अब ध्यान से देखो! ये ऽऽऽऽ!
क्लिक
वाह!
प्रोफेसर हान ने बटन दबाया और सामने एक पूरी सेना खड़ी हो गई!

क्या कोई कह सकता है, जनरल कि ये असली सिपाही नहीं, बल्कि उनकी चलती-फिरती थ्री डायमेंशनल इमेजस् हैं?
यानि तीन-आयामी आकृतियां? नहीं! ये तो बिल्कुल असली लग रहे हैं!
और जानते हो? इस कैसेट में आकृतियों के साथ-साथ आवाज भी भरी जा सकती है!
अच्छा!

हा हा! ये प्रोजेक्टर बैटरी से चलते हैं और कहीं पर भी फिट किए जा सकते हैं!
इनको इस रिमोट कंट्रोलर से भी चलाया जा सकता है!
मैंने ऐसे दस प्रोजेक्टर बनाए हैं!

वाह, प्रोफेसर! लेकिन आपका यह आविष्कार अगर दुश्मनों के हाथ में पड़ गया तो वे भी ऐसे कई प्रोजेक्टर बना डालेंगे।
कभी नहीं! कभी नहीं!

मैंने इन सभी प्रोजेक्टरों के अंदर एक ऐसा बम फिट किया है, जो इनको खोलते ही फट पड़ेगा! और पूरे प्रोजेक्टर के चिथड़े उड़ जाएंगे!
मैं कल ही इसको राष्ट्र-पति जी के पास दिखाने के लिए ले जा रहा हूं!

..उस वक्त अचानक ही मेरे दिल में एक इच्छा जाग उठी! इस देश का तानाशाह बनने की इच्छा! मुझे इस बात का तुरंत आभास हो गया कि यह प्रोजेक्टर मेरी इच्छा को पूरा करवा सकता है।...

..और इसीलिए, प्रोजेक्टरों के बारे में पूरी जानकारी उगलवाने के बाद, मैंने प्रो॰ हान को हमेशा के लिए खामोश कर दिया।...
लेकिन इसके लिए यह जरूरी था कि किसी को इसकी भनक तक न लगे।-

...मेरी स्कीम राष्ट्रपति को उनके मरे हुए संबंधियों की तीन आयामी आकृतियां दिखा-दिखा कर पागल घोषित करा देने की थी! ताकि देश में संवैधानिक संकट उत्पन्न हो जाए, और मैं सेना के जरिए सत्ता संभाल लूं!

इस काम को अंजाम देने के लिए मैंने इस कमरे में कुछ प्रोजेक्टर फिट कर दिए!
और उनमें राष्ट्रपति की पत्नी और पिता का मेकअप किए एक्टरों की रीलें भर दीं।

राष्ट्रपति का निजी सचिव मानसुन मेरा आदमी था। वह कमरे के बाहर खड़ा होकर रिमोट कंट्रोल के जरिए तीन आयामी आकृतियों को भूत बनाकर पेश करता रहता था।

एक मिनट, जनरल! कल राष्ट्रपति जी की पत्नी की आकृति, जो उनको दिख रही थी, वह मुझे क्यों नहीं दिखी?
इस प्रोजेक्टर से कई अलग-अलग तरह की आकृतियां प्रोजेक्ट की जा सकती हैं।

उनमें से कुछ खास किस्म की आकृतियों को, एक स्पेशल शीशे से ही देखा जा सकता है। उन स्पेशल शीशों को मैंने राष्ट्रपति के चश्मे में फिट करवा दिया था। इसीलिए वे आकृतियां सिर्फ उनको ही दिखती थीं।
ओह! तो ये बात थी!!

बोलते जाओ, जनरल! बोलते जाओ!
गड़बड़ी मानसुन की मौत के बाद से शुरू हुई! मेरे पास और कोई भरोसे लायक आदमी नहीं था!
इसीलिए मैंने फिर एक स्कीम बनाई!
जिसका खास मोहरा था... ध्रुव!

इसके कमरे में रखी इसके असली मां-बाप की फोटो के अनुसार, मैंने एक्टरों का मेकअप करके कुछ रीलें तैयार कीं। और फिर, इसके कमरे में प्रोजेक्टर फिट करके, उनमें वह रीलें भर दीं!

फिर जैसा मैंने सोचा था, वैसा ही हुआ! ध्रुव अपने मां-बाप की आकृतियों का पीछा करता-करता वहां तक आ गया, जहां पर मैं कापालिक के भेष में इसका पहले से इंतजार कर रहा था!

इसको अपने प्रभाव में लेकर मैं यहां तक पहुंच गया! इस अस्थिदंड में छिपे रिमोट कंट्रोल के जरिए मैंने इस कमरे वाला सारा नाटक किया!
और वह अनुष्ठान?

अनुष्ठान तो सिर्फ एक बहाना था! दरअसल मुझे राष्ट्रपति को एकांत में दबोचने का मौका चाहिए था! ताकि मैं उसकी हत्या करके गायब हो जाऊं!
लेकिन यह काम तो तुम कभी भी कर सकते थे! क्योंकि राष्ट्रपति कक्ष पर तो तुम खुद ही पहरा देते थे!

यह इतना आसान नहीं था! डॉ॰ थापा, अक्सर पूरी रात, राष्ट्रपति कक्ष में ही रहते थे। दिन में यह काम करना असंभव था!...
...और मैं यह बिल्कुल भी नहीं चाहता था कि किसी को भी, जनरल बिलाल पर रत्ती भर भी शक पड़े!

राष्ट्रपति की हत्या के बाद लोग आत्माओं पर शक करते रह जाते! अगर किसी को कापालिक पर शक होता भी तो कापालिक उनको कभी न मिलता!...

..क्योंकि कापालिक तब तक वापस जनरल बिलाल बन चुका होता।
वाह! तुमने मेरी हत्या की कोशिश तो ज़रूर की, बिलाल!..
...लेकिन तुम ने जो स्कीम बनाई, वह वाकई काबिले तारीफ थी।
और फिर-बाद में-
तुमने सिर्फ मुझपर ही नहीं, बल्कि पूरे मापाल पर अपने एहसानों का बोझ लाद दिया है, ध्रुव!
एहसान कैसा, श्रीमान? यह तो मेरा कर्तव्य था!

जो भी कह लो। लेकिन तुमने दो ही दिनों में यह सब कैसे कर दिखाया?
शक तो मुझे पहले दिन ही हो गया था, जब आपके कमरे की गोल टेबल अपने आप पलट गई थी।

जब मैंने उसके पाए में एक धागा बंधा देखा, तो मैं समझ गया कि किसी ने बाहर से डोरी खींचकर टेबल को पलटाया है।...
...बाहर आकर, मानसुन को भागते देखकर मेरा शक और पक्का हो गया!

...मैं समझ गया कि इन आत्माओं के पीछे आदमियों का ही हाथ है। शुरू में मेरा सारा शक नागफन भंडारी और डॉ॰ थापा पर था! मेरा ख्याल यह था, कि चूंकि आत्माएं सिर्फ आप को ही दिखती हैं, इसलिए वे किसी दवा का नतीजा भी हो सकती हैं।...
..और ऐसी दवाई आपको सिर्फ डॉ॰ थापा ही दे सकते थे।...

...लेकिन कल रात को जब मुझे भी आत्माएं दिखाई पड़ीं, तो मेरा विचार एक झटके में बदल गया। मैंने तय किया कि मैं भी ऐसा दिखावा करूं, जैसे मुझे भी आत्माओं पर यकीन हो गया है।...

...मेरी योजना सफल भी रही! कापालिक के रूप में जनरल बिलाल ने यही समझा, कि मैं उस के चक्कर में फंस गया हूं!...

...लेकिन असलियत यह थी कि जनरल बिलाल मेरे चक्कर में फ़ंस रहा था!
जनरल बिलाल को तुमने पहचाना कैसे? मैं और डॉ० थापा तो उसको बिल्कुल नहीं पहचान पाए!

तुरंत तो उसको मैं भी नहीं पहचान पाया था! क्योंकि जहां पर मैंने उसको कापालिक के रूप में देखा था, वहां काफी अंधेरा था!...
...और उसने मेकअप भी काफी अच्छा किया था!...

...लेकिन जब मैंने उसको राजभवन की रोशनी में देखा, तो पाया कि कापालिक के माथे की, ऊपर वाली खाल का रंग, बाकी चेहरे से काफी गोरा था! ठीक वैसा ही जैसा धूप में हमेशा टोप पहनने से हो जाता है!...
...यह गौर करते ही, मैं एक झटके में उसको पहचान गया!

...मेरा रहा-सहा शक तब दूर हो गया, जब वह राजभवन में घुसकर, बगैर रास्ता बताए, सीधे आप के कक्ष तक पहुंच गया!
यह सब तो स्पष्ट है! पर एक बात मुझको अब तक समझ में नहीं आई!
कौन सी, श्रीमान?

कि वह भारी मूर्ति अपने आप कापालिक के हाथ पर कैसे गिर गई? मुझे तो ऐसा लगा जैसे किसी ने उसको गिराया था!
लेकिन किसने?
इस सवाल का ध्रुव के पास कोई जवाब नहीं था।
समाप्त